विपदा में हैं हिम तेंदुए

डॉ. चन्द्रशीला गुप्ता

विलुप्त होने की कगार पर खड़े प्राणियों में हिम तेंदुआ यानी स्नो लेपर्ड फिर से चिन्ता का विषय बना है। मई 2005 में पर्यावरण मंत्रालय ने जम्मू-कश्मीर सरकार, भारतीय वन्य प्राणी संस्थान, देहरादून तथा अमेरिका की कैलिफोर्निया स्थित हिम तेंदुआ संरक्षण संस्था को संयुक्त रूप से हिम तेंदुए का अध्ययन, संरक्षण तथा संवर्धन करने की परियोजना को मंज़ूरी दी। यह अब रक्षा मंत्रालय में विचाराधीन है। अब भारतीय और अमेरिकी शोधकर्ता हिम तेंदुओं की दिनचर्या, उनके प्राकृतवास, शिकार व्यवहार तथा अन्य गतिविधियों की जानकारी के लिए 'ग्लोबल पोज़ीशनिंग सिस्टम' तकनीक की मदद लेंगे। इस परियोजना पर 62,000 अमेरिकी डॉलर का खर्च होगा।

हिम तेंदुओं के विषय में अभी बहुत कम व्यवस्थित अध्ययन किए गए हैं। खूबसूरत हिम तेंदुआ विश्व के सबसे रहस्यमय वन्य जीवों की श्रेणी में आता है। बर्फीले ऊंचे क्षेत्रों में वास करने वाला हिम तेंदुआ कभी-कभी ही स्थानीय लोगों को दिखाई देता है। यह लुकाछिपी में इतना माहिर है कि पूरे विश्व में इसकी सही संख्या भी पता नहीं है। वैसे पूरे विश्व में लगभग 7000 हिम तेंदुए होने का अनुमान है।

हिम तेंदुआ मुख्यतः मध्य एशिया के बर्फीले पहाड़ी क्षेत्रों में रहता है। इसमें मध्य रूस, मंगोलिया, पश्चिमी चीन तथा तिब्बत, उजबेकिस्तान, तज़ाकिस्तान, भारत, पाकिस्तान, अफगानिस्तान, भूटान तथा नेपाल का हिमालयी क्षेत्र आता है। 30 लाख वर्ग कि.मी. के इस मध्य एशियाई क्षेत्र के मात्र 16 लाख वर्ग कि.मी. में ही तेंदुए मिलते हैं और अधिकांश तिब्बत एवं पश्चिमी चीन में ही मिलते हैं। हिम तेंदुए की 60 प्रतिशत आबादी चीन में हैं।

हिम तेंदुआ सामान्यतः 3000 से 4000 मीटर की ऊंचाई वाली बर्फ से ढंकी खड़ी ढलानों तथा झाड़ीदार घाटियों में निवास करता है। हिमालयी क्षेत्र में इसे 6000 मीटर ऊंचाई पर और रूस व मंगोलिया में 900 मीटर ऊंचाई वाले क्षेत्रों में भी देखा गया है। सर्दी के दिनों में तापमान बहुत कम हो जाने पर भोजन की तलाश में यह लगभग 1000 मीटर नीचे तक आ सकता है।

वयस्क हिम तेंदुआ 10-15 दिनों के अंतराल पर ही कोई बड़ा शिकार करता है। कभी-कभी अपने वज़न से तिगुने से भी अधिक वज़न के जानवर का शिकार करने से भी नहीं हिचकता। चीन के शंघाई प्रांत में गर्मी के दिनों में यह अपने भोजन की आधी पूर्ति मार्मोट चूहे से करता है। वर्ष की शेष अवधि में हिरण, जंगली सूअर, याक-शावक एवं अन्य ढोर, जंगली भेड़-बकरी व गधे आदि को शिकार बनाता है। वैसे अत्यधिक ठंड के दिनों में यह विलो वृक्ष की छाल भी खा लेता है।

यह एकांतप्रिय प्राणी है। इसे झुंड या समूह में नहीं देखा गया है। प्रणय काल में ही नर-मादा एक साथ दिखाई देते हैं। नर अपना इलाका बनाता है जिसमें कई मादाएं रहती हैं। मादा 3 वर्ष की आयु में वयस्क हो जाती है। गर्भकाल 98-104 दिन का होता है। एक बार में 3-4 शावक जन्मते हैं। शावकों की त्वचा पर काले-काले धब्बे होते हैं, इनकी आंखें नौ दिनों के बाद खुलती हैं। दस दिन

बाद वे चलने- फिरने लगते हैं और 18-22 माह में स्वतंत्र जीवन यापन करने लगते हैं।

इस एकांत प्रिय प्राणी पर खतरा तब शुरू हुआ जब युरोपवासियों को इसकी बेहद खूबसूरत फरयुक्त खाल ने आकर्षित किया। अंतर्राष्ट्रीय बाज़ार में इसकी एक खाल की कीमत लगभग 500 डॉलर है। हिम तेंदुए एक ओर खाल के लालच में निशाना बनते हैं वहीं दूसरी ओर, प्राकृतिक आवास में भोजन की कमी होने से ये जब पालतू जानवरों का शिकार करने लगते हैं तब ग्रामवासी अपने पशुओं की रक्षा के लिए इनको मार डालते हैं।

तिब्बत व अन्य स्थानों पर मार्मोट व पाइका को ज़हर दिए जाने से इनके भोजन में कमी आई है। उधर बाघ की हड्डियों की उपलब्धता में कमी होने से चीन में पारम्परिक दवा निर्माण में हिम तेंदुओं की हड्डी की मांग बढ़ गई है।

वैसे तो फर व्यापार का नियमन करने वाली संस्था ने हिम तेंदुए के फर के व्यापार पर पूर्ण प्रतिबंध लगा रखा है। फिर भी काला बाज़ार में खाल उपलब्ध हैं। बड़ी दुखद बात है कि एक कोट तैयार करने में लगभग सात तेंदुओं की जान जाती है। इसकी खाल का उपयोग करना कानूनन अपराध है फिर भी नेपाल के काठमांडू, चीन व मंगोलिया के कुछ शहरों में चोर बाज़ार में कोट उपलब्ध हैं। साथ ही मंगोलिया सरकार कई डॉलर लेकर पर्यटकों को हिम तेंदुए के शिकार की कानूनी इज़ाजत भी देती है।

हिम तेंदुए के लम्बे आकर्षक फर का रंग धूसर से पीलापन लिए होता है जिस पर बड़े-बड़े आकर्षक धब्बे होते हैं। ये रंग व चिन्ह हिम तेंदुए को हिमपर्वतों में छुपने में सहायक होते हैं। मस्तक पर गोल-गोल छोटे काले धब्बे होते हैं व सीना तथा पेट सफेद होता है। शरीर पर लम्बे फर होते हैं। सोते समय हिम तेंदुआ गर्मी पाने के लिए अपनी दो मीटर लम्बी पूंछ को शरीर पर लपेट लेता है।

इसकी खोपड़ी बड़ी, ललाट ऊंचा व थूथन लम्बा होता है। इसके पैर छोटे-छोटे तथा सीना चौड़ा होता है। इसके कान छोटे व घुमावदार होते हैं। जो इसे विरल स्थानों पर शिकार करने में मदद करते हैं। अन्य पहाड़ी प्राणियों के कान भी इसी प्रकार के होते हैं। इनके चौड़े पंजे बालों के कुशन से ढंके रहते हैं जो ठंड से बचाने के साथ-साथ बर्फ पर शरीर के भार का संतुलन बनाए रखने में मदद करते हैं।

हिम तेंदुआ अपने कुल के अन्य प्राणियों की तरह दहाड़ता नहीं है, केवल गुर्रा सकता है। फुर्तीले और तेज़ स्वभाव वाला यह प्राणी अपनी छलांग के लिए भी प्रसिद्ध है। यह करीब 6 मीटर ऊंची व 15 मीटर लंबी छलांग लगा सकता है। इसकी लम्बी पूंछ संतुलन बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

दिन में यह काले गिद्धों द्वारा बनाए गए घोंसलों में आराम करता है और शाम ढलने के बाद सक्रिय होता है। एक क्षेत्र विशेष में यह एकाध सप्ताह ही रहता है। यह अपने शिकार का पीछा खड़ी ढलानों पर ऊपर-नीचे आते हुए करता है। ढलान पर भागते हुए शिकार पर अचानक छलांग लगाकर झपट्टा मारकर उसे दबोच लेता है। यह इंसान पर अकारण हमला कभी नहीं करता।

हिम तेंदुओं की घटती संख्या तथा लुप्त होने के खतरे को देखते हुए 1981 में इनके संरक्षण, संवर्धन तथा अध्ययन हेतु 'इन्टरनेशनल स्नो लेपर्ड ट्रस्ट' की स्थापना की गई थी। यह ट्रस्ट हिम तेंदुओं के अध्ययन सम्बंधी फील्ड रिपोर्टो तथा स्थानीय संख्या आदि के आंकड़े रखता है। इसने चीन, मंगोलिया, पाकिस्तान, भारत, नेपाल तथा भूटान में प्रशिक्षण कार्यशालाओं का आयोजन भी किया है। फलस्वरूप स्थानीय निवासियों तथा हिम तेंदुओं के बीच विरोध कम हुए हैं। पालतू पशुओं की कम होती संख्या में रुकावट आई है। संरक्षित क्षेत्रों की व्यवस्था के प्रति स्थानीय लोगों में सकारात्मक रुझान पैदा हुआ है। स्नो लेपर्ड ट्रस्ट ने स्थानीय लोगों को वालंटीयर्स के रूप में प्रशिक्षित भी किया है।

हिम तेंदुआ संरक्षण संस्था इस समय भारत, नेपाल, उत्तरी पाकिस्तान, तिब्बत तथा तज़ाकिस्तान में कई स्थानों पर इनके संरक्षण तथा संवर्धन सम्बंधी परियोजनाओं का संचालन कर रही है। यह स्थानीय लोगों से विस्तार से चर्चा करती है, उनकी समस्याओं को सुनती है तथा मिल-बैठकर सामुदायिक स्तर पर समस्या का समाधान ढूंढती

है। यह संस्था स्थानीय लोगों के लिए हिम तेंदुआ आक्रमण प्रतिरोधी पशु शालाओं के निर्माण हेतु संसाधन जुटाती है। पशुधन व्यवस्था के विषय में जानकारी देती है, स्थानीय संसाधनों से व्यापार के अन्य तरीके सिखाती है तथा बच्चों को स्कूल भेजने के लिए प्रेरित करती है।

इन प्रयासों के चलते ग्रामीण अपने पालतू पशुओं को हिम तेंदुओं के प्राकृतवास की ओर न ले जाने के लिए राजी हो जाते हैं जिससे हिम तेंदुओं का शिकार क्षेत्र मानवीय गतिविधियों से उत्पन्न होने वाले व्यवधान से बचा रहता है। संस्था द्वारा चलाई जा रही रचनात्मक परियोजनाओं को स्थानीय जनता का पूरा सहयोग प्राप्त हो रहा है।

हिम तेंदुए से जुड़ी भारत में चलाई जाने वाली इस परियोजना में सबसे पहले प्रसिद्ध हिम तेंदुआ विशेषज्ञ डॉ. रोडनी जैक्सन का नाम आता है। उन्हें नेपाल में लगातार चार वर्षों तक हिम तेंदुओं के रेडियोट्रेकिंग अध्ययनों के लिए 1981 में प्रतिष्ठित रोलेक्स अवार्ड फॉर एन्टरप्राइज़ेस भी मिला है। पहली बार उन्होंने प्राकृतवास में रहने वाले हिम तेंदुओं के गले में रेडियो पट्टे डालकर उनकी खबर रखने की विधियों का मानकीकरण किया है। उन्होंने इनके व्यवहार व अन्य गतिविधियों से सम्बंधित विभिन्न प्रकार के आंकड़े पहली बार एकत्र किए हैं।

सन 1984 में चिड़ियाघरों में इनके सवंर्धन की योजना लागू की गई थी। कुछ मादाओं पर कृत्रिम गर्भाधान विधियों का भी प्रयोग किया गया और नर हिम तेंदुओं के शुक्राणु बैंक भी स्थापित किए गए हैं।

उत्तरांचल के वन एवं पर्यावरण विभाग ने भी हिम तेंदुओं के सरंक्षण के लिए एक्शन प्लान बनाया है। उम्मीद की जा रही है कि इससे प्रदेश के नंदादेवी बायोस्फीयर रिज़र्व के हिम तेंदुओं के सरंक्षण एवं संवर्धन की चुनौती से निपटा जा सकेगा। ***(स्रोत विशेष फीचर्स)***